SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व"

राधा रानी
शोधार्थिनी
श्रीवेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध निर्देशक
श्रीवेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा

सारॉंशरू

चेतन प्राणियों में मानव शिशु सबसे अधिक दुर्बल होता है। जिस समय उसका जन्म होता है, उस समय न वह चल फिर सकता है, न स्वयं खा–पी सकता है और न ही अपनी आवश्यकताओं को दूसरों पर ही अभिव्यक्त कर सकता है। जहाँ अन्य पशुओं के शिशु कुछ सप्ताह अथवा कुछ माह बीतते ही हाथ पैरों से पुष्ट होकर उछलने–कूदने और शिकार करने लगते हैं। वहीं मानव शिशु कितने ही वर्षो तक सर्वथा निरूपाय और पर –निर्भर बना रहता है। यदि दूसरे लोग उसकी देखभाल न करें तो उसका अस्तित्व नहीं बच सकता, किन्तु यही निरूपाय प्राणी कालान्तर में बड़ा होकर समस्त प्राणी जगत पर शासन करता है। वह केवल भूमण्डल पर ही नहीं, वरन् जल और गगन में भी स्वच्छन्द विचरण करता है। अपने मस्तिष्क की उड़ानों से यह पृथ्वी से करोड़ों योजन दूर के ग्रह–नक्षत्रों को भी खबर लाता है। यह सारा अन्तर केवल शिक्षा से ही होता है।

शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निरूपाय और पर – निर्भर शिशु सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव –जाति द्वारा अर्जित सहस्त्रों वर्षो के अनुभव आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित किये जाते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने समाज की संस्कृति को ग्रहण करता है। शिक्षा के द्वारा उसका शारीरिक, मानसिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा उसके चरित्र का

निर्माण होता है और वह आत्म विकास के पथ पर अग्रसर होता है। शिक्षा से ही उसका सामाजीकरण होता है और वह मनुष्य की संज्ञा पाने योग्य बनता ह। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है मानव के ज्ञान विज्ञान की प्रगति में शिक्षा की प्रक्रिया सबसे अधिक आश्चर्यजनक सबसे अधिक महत्वपूर्ण और क्रान्तिकारी खोज है।

वैदिक काल से ही भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करता है। ज्ञान मनुजष्य तृतीय नेत्र ज्ञान जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने में समर्थ बनाता है तथा उसे सही कार्यो हेतु प्रवृत्त करता है। विद्या हमें परलोक में मोक्ष तथा संसार में समृद्धि और प्रगति दिलाती है। विद्या से हमें जिस ज्योति की प्राप्ति होती है वह संशयों और कठिनाईयों को दूर करती है तथा जीवन के वास्तविक महत्व को समझने योग्य बनाती है। जिसे ज्ञान की ज्योति प्राप्त नहीं है वह आँखे होते हुए भी अन्धा है। विद्या भ्राता की भाँति हमारी रक्षा करती है, पिता की भाँति हित कार्य में लगाती है, पत्नी की भाँति खेदों को दूर करती तथा प्रसन्नता देती है। विद्या से कीर्ति बढ़ती है, बाधाएँ नष्ट होती है और हम पवित्र तथा सुसंस्कृत बनते हैं। जब हम किसी यात्रा को निकलते है या विदेश में होते है, तो एकान्त में वहाँ विद्या ही हमारी सहचरी होती है समस्त मानवीय आनन्दों की मूल विद्या ही है, इससे हमारी योग्यता में वृद्धि होती है, राजसभा और जनसभा में आदर मिलता है, जिससे धन और यश दोनों की उपलब्धि होती है। भृतहरि का कथन है कि विद्याहीन मनुष्य पशु है। शिक्षा ही हमें मनुष्य बनाती है।

प्राचीन काल में शिक्षा का तात्पर्य प्रकाश से था अतः यह कहना व्यर्थ है कि केवल पुस्तकीय ज्ञान ही शिक्षा का पर्यायवाची है। कहा गया है कि विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान रखने पर यदि व्यक्ति में अर्न्तदृष्टि का विकास नहीं हुआ और उसे अंर्तज्योति का उपलब्धि नहीं हुई है तो वह मूर्ख ही है, क्रियावान पुरूष ही सच्चे अर्थो में शिक्षित है। शिक्षा उदरपूर्ति की समस्या भी हल करती है। एक विचारक का कथन है कि यदि कुछ शब्दों को रट लेने मात्र से ही शुक (तोता) भोजन प्राप्त कर लेता है, तो एक विद्वान भला कैसे भूखा मर सकता है। शिक्षा का उद्देश्य हमें जीने योग्य बनाना ही नहीं बल्कि जीविका कमाने योग्य भी बनाना है। **ए०एस०आल्टेकर** ने लिखा है कि प्राचीन काल में शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता था, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके, हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती हैं। बौद्ध शिक्षा में भी वैदिक शिक्षा के समान ही शिक्षा को आध्यात्मिक उपलब्धियों का साधन माना गया था। महात्मा बुद्ध ने इस संसार के समस्त दुःखों का मूल अविद्या या अज्ञानता को माना है। अतः शिक्षा द्वारा सच्चा

ज्ञान प्राप्त होने पर ही मनुष्य को दुःखों से छुटकारा मिलता है और उसे निर्वाण प्राप्त होता है। इस प्रकार बौद्ध काल में शिक्षा को निर्वाण प्राप्ति का साधन माना गया था।

मुस्लिम काल में (तालीम) शिक्षा को निजात तथा मुक्ति का साधन माना गया और शिक्षा का प्रसार करना सवाब का काम माना गया है। कहा गया कि शिक्षा सामाजिक कुशलता में वृद्धि करती है तथा जीविकोपार्जन की समस्या हो हल करती है। प्रत्येक मुस्लिम के लिए तालीम हासिल करना लाजिमी कहा गया है। **स्वामी विवेकानन्द** का मानना था कि शिक्षा के बिना भारतवासियों में आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं हो सकता। उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारतीयों की हीन दशा का कारण उपयुक्त शिक्षा का अभाव है। **स्वामी दयानन्द** जी के अनुसार वह जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा जितेन्द्रियता आदि की बढ़त हो और अविद्यादि दोष छूटे उसको शिक्षा कहते हैं। इस प्रकार शिक्षा के पांच लक्षण है जैसे विद्या प्रदान करना, सभ्य बनाना, धर्मात्मा बनाना, जितेन्द्रियता बढ़ाना और अविद्या से मुक्ति दिलाना। इस प्रकार शिक्षा में इहलौकिक और पारलौकिक सभी विद्याएँ आ जाती हैं। आदर्शवादी होने के काण दयानन्द जी ने शिक्षा व्यवस्था में चरित्र के विकास को अत्यधिक महत्व दिया है। यह चारित्रिक विकास ज्ञानार्जन पर आधारित है, क्योंकि विद्या अथवा ज्ञान के बिना चरित्र नहीं बन सकता। विद्या से इहलोक और परलोक दोनों संवरते हैं।

महात्मा गाँधी जी ने कहा है, शिक्षा में मेरा तात्पर्य शिशु और मनुष्य में शरीर, मन और आत्मा जो कुछ सर्वोत्तम है उसकी सर्वांगीण अभिव्यक्ति है। साक्षरता शिक्षा का लक्ष्य नहीं है और न उससे शिक्षा आरंभ ही होती है। वह तो उन अनेक साधनों में से एक है। जिनमें स्त्री–पुरूष शिक्षित किये जाते हैं। गाँधी जी ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य स्वावलम्बन माना है। इसलिए गांधी जी ने अंग्रेजी सरकार द्वारा चलायी जा रही तत्कालीन शिक्षा योजना की कटु आलोचना की और बुनियादी शिक्षा में मुख्य बल स्वाबलम्बन पर देते हुए सर्वांगीण विकास का उद्देश्य निर्धारित किया।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने माना कि शिक्षा का लक्ष्य आत्म साक्षात्कार है। अतः शिक्षार्थी का लक्ष्य अपनी संकुचित इच्छाओं और प्रेरणाओं से ऊपर उठकर इन्द्रियों बुद्धि और मानसिक शक्तियों द्वारा परिष्कार हो और समाज, राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता का भेद–भाव न रहें। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली के प्रमुख सिद्धांत है। इन सिद्धान्तों की प्राप्ति उचित शिक्षा के द्वारा ही हो सकती है। भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है। भारत में सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक आदि सभी क्षेत्रों में भिन्नताएँ है जिसके कारण समाज में विभिन्न प्रकासर के अन्तर हैं, परन्तु इतने विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र में फैले राष्ट्र भारत में भिन्नताएँ होना

आवश्यक है तथा इस विविधता में एकता स्थापित करने हेतु शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार आवश्यक है। अतः भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है कि वह अपनी संतति को उचित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रयास करें तथा संविधान में दी गयी व्यवस्था के अनुसार, संवैधानिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सरकार द्वारा किये गये प्रावधानों को सही प्रकार से लागू करवाये जिससे लोकतान्त्रिक आदर्शो और संवैधानिक लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकें।

सन्दर्भ

1. रूहेला, एस०पी० (2010), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
2. गुप्ता, एस०पी० (2011), शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. आल्तेकर, ए०एस० (2017), प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, मनोहर प्रकाशन, वाराणसी।
4. प्रसाद जयशंकर, (2019), प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
5. लाल, रमन, बिहारी, (2020), शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. सिंह, कर्ण (2021), भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर खीरी। विष्णु पुराण कोडेडे बाय, जयशंकर प्रसाद,।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/20

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

राधा रानी एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com